# मेन्स मास्टर

## एक हरित राजकोषीय खाका

परिदृश्य को समझना:

वन संरक्षण और जलवायु कार्रवाई पहल में भारत के सराहनीय प्रयासों से समुदाय और पारिस्थितिकी तंत्र के लचीलेपन के निर्माण में सकारात्मक परिणाम मिले हैं। हालाँकि, वन संरक्षण से जुड़ी महत्वपूर्ण आर्थिक लागत, जो मुख्य रूप से राज्यों द्वारा वहन की जाती है, के लिए मजबूत वित्तीय सहायता तंत्र की आवश्यकता होती है। यहीं पर वित्त आयोग (एफसी) एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

गियर बदलना: मध्यस्थ से ऑर्केस्ट्रेटर तक:

पिछले एफसी (12वीं-15वीं) ने इस चुनौती को स्वीकार किया और वन आवरण को बनाए रखने और सुधारने के लिए राज्यों के लिए धीरे-धीरे वित्तीय प्रोत्साहन बढ़ाया। 15वां एफसी इस संबंध में एक वैश्विक नेता के रूप में खड़ा है, जिसने वन आवरण और घनत्व के आधार पर 10% कर आवंटित करके पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए दुनिया का सबसे बड़ा भुगतान स्थापित किया है। हालाँकि, 16वें एफसी को एक महत्वपूर्ण कार्य का सामना करना पड़ रहा है - पेरिस समझौते के तहत भारत के महत्वाकांक्षी जलवायु लक्ष्यों के साथ कर वितरण को संरेखित करना। इसके लिए एफसी की भूमिका में एक महत्वपूर्ण विकास की आवश्यकता है, जो इसे एक पारंपरिक राजकोषीय मध्यस्थ से भारत की जलवायु तत्परता के ऑर्केस्ट्रेटर में बदल दे।

सामंजस्य के लिए राजकोषीय खाका तैयार करना:

16वें एफसी को एक व्यापक राजकोषीय खाका तैयार करने की जरूरत है जो पर्यावरणीय अनिवार्यताओं के साथ आर्थिक विकास में सामंजस्य स्थापित करे। इसे प्राप्त करने के लिए मुख्य अनुशंसाओं में शामिल हैं:

1. जलवायु-केंद्रित कर हस्तांतरण:

• कर-साझाकरण फॉर्मूले में मुख्य मापदंडों के रूप में जलवायु भेद्यता और उत्सर्जन तीव्रता को एकीकृत करें। यह राज्यों को नवीकरणीय ऊर्जा अपनाने, टिकाऊ भूमि प्रबंधन और कुशल परिवहन प्रणालियों के माध्यम से उत्सर्जन में कमी को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

• एक सूक्ष्म फॉर्मूला विकसित करें जो जलवायु कार्रवाई के साथ राजकोषीय समानता को संतुलित करता है, दूसरों के सक्रिय प्रयासों को हतोत्साहित किए बिना कमजोर राज्यों के लिए समर्थन सुनिश्चित करता है।

2. प्रदर्शन-आधारित अनुदान:

• ऊर्जा और परिवहन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को डीकार्बोनाइजिंग करने, स्थायी भूमि और वन प्रबंधन प्रथाओं को लागू करने और व्यक्तिगत कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के लिए जीवनशैली में बदलाव को बढ़ावा देने जैसे प्रमुख क्षेत्रों में राज्यों के प्रदर्शन के आधार पर क्षेत्र-विशिष्ट अनुदान आवंटित करें।

• वायु प्रदूषण की चुनौतियों से निपटने के साधन के रूप में स्वच्छ ऊर्जा पहल को प्राथमिकता दें।

• फसल जलाने, मैंग्रोव पुनर्स्थापन (बाढ़ के खतरों को कम करने के लिए महत्वपूर्ण) और जंगल की आग की रोकथाम जैसी जटिल प्रतीत होने वाली समस्याओं के समाधान के लिए नवीन समाधानों के लिए विशिष्ट वित्तपोषण प्रदान करें।

3. डेटा-संचालित निर्णय लेना:

• राज्य की संवेदनशीलता और शमन प्रयासों का सटीक आकलन करने के लिए मौजूदा अध्ययनों, विभिन्न स्तरों पर प्रदूषण सूची और रिमोट सेंसिंग डेटा का लाभ उठाएं। यह डेटा एक मजबूत प्रदर्शन-आधारित फंड आवंटन प्रणाली को डिजाइन करने में महत्वपूर्ण होगा।

• यह सुनिश्चित करने के लिए वैज्ञानिक संस्थानों और जलवायु विशेषज्ञों के साथ सहयोग करें कि नीतिगत निर्णय नवीनतम अनुसंधान और ज्ञान से सूचित हों।

4. बहु-हितधारक सहयोग को बढ़ावा देना:

• 16वें एफसी को केंद्र सरकार, राज्यों, स्थानीय समुदायों और निजी क्षेत्र के हितधारकों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करते हुए एक सुविधाप्रदाता के रूप में कार्य करने की आवश्यकता है। यह सहयोगात्मक दृष्टिकोण नीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन और कुशल संसाधन आवंटन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण होगा।

केवल संख्याओं से परे:

16वें एफसी की सफलता न केवल एक प्रभावी वित्तीय तंत्र को डिजाइन करने पर बल्कि परिप्रेक्ष्य में मौलिक बदलाव को बढ़ावा देने पर भी निर्भर करती है। अब पर्यावरण संरक्षण को एक लागत के रूप में देखने से आगे बढ़ने और इसे दीर्घकालिक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि में निवेश के रूप में पहचानने का समय आ गया है। इस समग्र दृष्टिकोण को अपनाकर और अनुशंसित रणनीतियों को लागू करके, 16वें एफसी में जलवायु परिवर्तन के खिलाफ भारत की लड़ाई में गेम-चेंजर बनने की क्षमता है, जो एक ऐसे भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगा जहां आर्थिक विकास और पर्यावरणीय कल्याण साथ-साथ चलेंगे।

## नंबर गेम

### संदर्भ

भारत की राष्ट्रपति, श्रीमती. द्रौपदी मुर्मू को स्वच्छ शहर, सबसे स्वच्छ छावनी, सफाई मित्र सुरक्षा, गंगा टाउन और सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले राज्य जैसी श्रेणियों में उपलब्धियों को मान्यता देते हुए, नई दिल्ली में स्वच्छ सर्वेक्षण पुरस्कार 2023 से सम्मानित किया गया। सूरत और इंदौर सबसे स्वच्छ शहर पुरस्कार के लिए संयुक्त विजेता थे, जबकि विभिन्न अन्य शहरों और राज्यों को स्वच्छता और स्वच्छता में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया था।

स्वच्छ सर्वेक्षण पुरस्कार शीर्ष शहरों के प्रभुत्व, वर्गीकरण में संभावित कमजोर पड़ने और अंतर्निहित पूर्वाग्रहों की चिंताओं को उजागर करते हैं, शीर्ष शहरों को घुमाने और अधिक प्रभावी राष्ट्रव्यापी स्वच्छता सुधार के लिए स्थायी प्रथाओं की ओर बदलाव जैसे समाधान प्रस्तावित करते हैं। सफलता प्रणालीगत असमानताओं को दूर करने और प्रतिस्पर्धी रैंकिंग से परे वास्तविक प्रगति को प्राथमिकता देने पर निर्भर करती है।

मुख्य टिप्पणियाँ:

• शीर्ष पर ठहराव: इंदौर और सूरत का दबदबा बना हुआ है, जिससे अन्य शहरों के बीच प्रतिस्पर्धा और प्रगति की कमी को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं।

• उप-श्रेणी भूलभुलैया: कई श्रेणियां, छोटे शहरों को मान्यता प्रदान करते हुए, फोकस को कम करती हैं और प्रासंगिकता के बारे में सवाल उठाती हैं (उदाहरण के लिए, "सबसे स्वच्छ छावनी")।

• अंतर्निहित पूर्वाग्रह: आर्थिक असमानताएं, ऐतिहासिक बाधाएं और राजनीतिक संबंध संभावित रूप से परिणामों को प्रभावित करते हैं, जिससे वंचित शहरों के लिए सुधार सीमित हो जाता है।

• प्रेरणा बनाम वास्तविकता: सार्वजनिक स्वच्छता पूरी तरह से स्थानीय प्रयासों से संचालित नहीं होती है; प्रणालीगत कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो "प्रतिस्पर्धा" को प्रगति का गलत प्रतिबिंब बनाते हैं।

प्रस्तावित समाधान:

• शीर्ष शहरों को घुमाएँ: व्यापक भागीदारी को प्रोत्साहित करने और असमानताओं को दूर करने के लिए, लगातार शीर्ष क्रम वाले शहरों को एक निर्धारित अवधि के लिए भविष्य के पुरस्कारों से बाहर रखा जा सकता है।

• अंतर्निहित मुद्दों पर ध्यान दें: वंचित शहरों में स्वच्छता प्रगति में बाधा डालने वाले कारकों (गरीबी, बुनियादी ढांचे की सीमाएं) को संबोधित करने के लिए सरकारी हस्तक्षेप महत्वपूर्ण है।

• संख्याओं से स्थिरता की ओर बदलाव: पुरस्कारों से आगे बढ़कर केवल एक प्रतियोगिता के रूप में देखें; दीर्घकालिक टिकाऊ प्रथाओं, समावेशिता और पहुंच को प्राथमिकता दें।

व्यापक आउटलुक:

सकारात्मक पहल को बढ़ावा देने के साथ-साथ, स्वच्छ सर्वेक्षण पुरस्कारों को राष्ट्रव्यापी स्वच्छता सुधार को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण बदलाव की आवश्यकता है। शीर्ष शहरों को घुमाना, प्रणालीगत असमानताओं को संबोधित करना और पुरस्कारों से परे वास्तविक प्रगति पर ध्यान केंद्रित करना अधिक प्रभावी और न्यायसंगत प्रणाली की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। पहल की सफलता न केवल उपलब्धियों को पहचानने में निहित है, बल्कि उन चुनौतियों से सक्रिय रूप से निपटने में भी है जो कई शहरों को अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने से रोकती हैं।

## भारतीय पुलिस के लिए एक केस डायरी

जयपुर में हाल ही में हुआ पुलिस सम्मेलन भारत के कानून प्रवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ पर प्रकाश डालता है। जबकि प्रौद्योगिकी और समसामयिक मुद्दों पर ध्यान बल को आधुनिक बनाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता का संकेत देता है, लेख गहराई से बताता है, लगातार चुनौतियों को उजागर करता है और सुधार के रास्ते सुझाता है।

ताकत:

• तकनीक प्रेमी: निचले स्तर के लोगों के बीच शिक्षा के स्तर में वृद्धि और प्रौद्योगिकी अपनाने पर ध्यान एक अधिक कुशल और उत्तरदायी पुलिस बल की ओर इशारा करता है।

सरकार का ध्यान: सम्मेलन और अधिकारियों के साथ प्रधान मंत्री मोदी की बातचीत प्रभावी पुलिसिंग के महत्व के बारे में सरकार की मान्यता को दर्शाती है।

कमजोरियाँ:

• सार्वजनिक छवि: लेख पुलिस की निराशाजनक सार्वजनिक छवि की कठोर वास्तविकता को स्पष्ट रूप से चित्रित करता है। विश्वास और विश्वास की कमी निम्नलिखित मुद्दों से उत्पन्न होती है:

  ◦ पुरानी प्रणाली: पदानुक्रमित आईपीएस संरचना उच्च रैंक का पक्ष लेती है, जिससे कांस्टेबल और उप-निरीक्षक जैसे निचले रैंक सीमित अवसर और प्रेरणा के साथ रह जाते हैं। यह समग्र प्रभावशीलता को बाधित करता है।

  ◦ राजनीतिक हस्तक्षेप: बल का राजनीतिकरण इसकी स्वायत्तता से समझौता करता है और पक्षपातपूर्ण कार्यों को बढ़ावा देता है, जिससे जनता का विश्वास और भी कम हो जाता है।

  ◦ सहानुभूति की कमी: लेख में कुछ अधिकारियों के बीच आम आदमी के लिए वास्तविक सहानुभूति की कमी की आलोचना की गई है। यह अलगाव अलगाव और भय की भावनाओं को बढ़ावा देता है।

सुधार की संभावनाएँ:

लेख इन कमजोरियों को संबोधित करते हुए व्यापक समाधान प्रस्तावित करता है:

• पदानुक्रम का पुनर्गठन: बेहतर संचार, सहयोग और निचले रैंकों को सशक्त बनाने के माध्यम से रैंकों के बीच अंतर को पाटने से मनोबल बढ़ेगा और उनकी क्षमता का उपयोग होगा।

• प्रशिक्षण में निवेश: वरिष्ठ अधिकारियों को अपने ज्ञान और सार्वजनिक सेवा कौशल को बढ़ाने, निचले रैंकों को शिक्षित करने और सलाह देने के लिए समय और संसाधन समर्पित करना चाहिए।

• अराजनीतिकरण: निष्पक्ष और प्रभावी कानून प्रवर्तन के लिए राजनीतिक प्रभाव से पुलिस की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए तंत्र स्थापित करना महत्वपूर्ण है।

• सामुदायिक जुड़ाव: विश्वास का निर्माण करने के लिए सार्वजनिक आउटरीच कार्यक्रम, संवेदनशीलता प्रशिक्षण और हिरासत में हिंसा जैसे मुद्दों को संबोधित करने जैसे सक्रिय कदमों की आवश्यकता होती है।

# प्रीलिम्स बूस्टर

## दूरबीन परियोजना का जायजा लेने के लिए विज्ञान मंत्रालय की टीम ने हवाई का दौरा किया

🌌 भारतीय प्रतिनिधिमंडल का मौना केआ, हवाई का दौरा:

- विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के सचिव प्रोफेसर अभय करंदीकर के नेतृत्व में।

- थर्टी मीटर टेलीस्कोप (टीएमटी) परियोजना की प्रगति में चुनौतियों का समाधान करने पर ध्यान दें।

🔭 तीस मीटर टेलीस्कोप (टीएमटी) के बारे में:

- 30 मीटर व्यास वाला प्राथमिक दर्पण ऑप्टिकल और इन्फ्रारेड टेलीस्कोप, मौना केआ, हवाई, संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित है।

2014 में केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदन के बाद से भारत इस परियोजना में एक संस्थापक-सदस्य भागीदार है।

- इसका उद्देश्य ऑप्टिकल और इन्फ्रारेड खगोल विज्ञान को आगे बढ़ाना, ब्रह्मांड के लिए नई खिड़कियां खोलना है।

🤝 बैठकें और चर्चाएँ:

- प्रतिनिधिमंडल ने टीएमटी इंटरनेशनल ऑब्जर्वेटरी (टीआईओ) बोर्ड के प्रोफेसर हेनरी यांग और प्रोफेसर रॉबर्ट किर्शनर सहित प्रमुख हस्तियों से मुलाकात की।
- टीएमटी की स्थिति, मौना केआ साइट, सिविल निर्माण, फंडिंग की स्थिति, इन-काइंड डिलिवरेबल्स पर प्रगति और अपेक्षित समयसीमा पर चर्चा की गई।

## डीआरडीओ ने आकाश मिसाइल का सफल उड़ान परीक्षण किया

🚀 DRDO का नई पीढ़ी के आकाश सैम का सफल उड़ान-परीक्षण:

- 12 जनवरी को सुबह 10:30 बजे ओडिशा के तट पर एकीकृत परीक्षण रेंज (आईटीआर), चांदीपुर में आयोजित किया गया।
- परीक्षण का उद्देश्य बहुत कम ऊंचाई पर उच्च गति वाले मानवरहित हवाई लक्ष्य के खिलाफ सफल उड़ान-परीक्षण था।

🎯 परिणाम और सत्यापन:

- उड़ान-परीक्षण के दौरान लक्ष्य को रोक दिया गया और नष्ट कर दिया गया, जिसमें स्वदेशी रूप से विकसित रेडियो फ्रीक्वेंसी सीकर, लॉन्चर, मल्टी-फ़ंक्शन रडार और कमांड, नियंत्रण और संचार प्रणाली के साथ मिसाइल सहित संपूर्ण हथियार प्रणाली को मान्य किया गया।

📡 डीआरडीओ का बयान:

- डीआरडीओ ने व्यक्त किया कि सफल परीक्षण ने उपयोगकर्ता परीक्षणों के लिए मार्ग प्रशस्त किया है और आईटीआर, चांदीपुर द्वारा तैनात रडार, टेलीमेट्री और इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल ट्रैकिंग सिस्टम द्वारा कैप्चर किए गए डेटा के माध्यम से सिस्टम के प्रदर्शन को मान्य किया है।

🌐 प्रौद्योगिकी हाइलाइट्स:

- आकाश-एनजी प्रणाली को एक अत्याधुनिक मिसाइल प्रणाली के रूप में वर्णित किया गया है, जिसमें सफल परीक्षण में प्रदर्शित उच्च गति, तीव्र हवाई खतरों को रोकने की क्षमता है।

## भारत मौसम विज्ञान विभाग की उत्पत्ति की कहानी

🌦️ आईएमडी की उत्पत्ति:

- 1864 में गंभीर प्राकृतिक आपदाओं के जवाब में 15 जनवरी, 1875 को स्थापित किया गया, जिसमें दो विनाशकारी चक्रवात, विशेष रूप से कोलकाता चक्रवात शामिल थे।

🌀 प्रारंभिक आपदाएँ:

- 1864 में कोलकाता चक्रवात और आंध्र तट से टकराने वाले भयानक चक्रवातों ने सामूहिक रूप से एक लाख से अधिक लोगों की जान ले ली, जिससे वायुमंडलीय मापदंडों के लिए निगरानी प्रणाली की कमी उजागर हो गई।

🌐 आईएमडी का गठन:

- 1864 के चक्रवातों से प्रेरित होकर, भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) की आधिकारिक तौर पर 15 जनवरी, 1875 को स्थापना की गई थी।

👥 संस्थापक कार्मिक:

- आईएमडी द्वारा नियुक्त पहले इंपीरियल मौसम विज्ञान रिपोर्टर एचएफ ब्लैनफोर्ड ने भारत की जलवायु और मौसम विज्ञान का अध्ययन करने, मौसम पूर्वानुमान जारी करने और चक्रवात की चेतावनी देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

🌧️ मानसून पर फोकस:

- बदलते जलवायु पैटर्न के बावजूद दक्षता के लिए प्रयास करते हुए, मानसून को समझने और भविष्यवाणी करने का आईएमडी का ऐतिहासिक जुनून इसकी शुरुआत से ही है।

🔝 चक्रवात पूर्वानुमान में नेतृत्व:

- आईएमडी के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने समय, जनशक्ति और प्रौद्योगिकी में निवेश के माध्यम से आपदाओं को रोकने के लक्ष्य के साथ चक्रवात पूर्वानुमान क्षमताओं को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

## चांदीपुर

पूर्वी भारत में चांदीपुर समुद्र तट एक दुर्लभ और मनोरम घटना का खुलासा करता है जहां समुद्र रोजाना पांच किलोमीटर तक पीछे हट जाता है, जिससे आगंतुकों को कम ज्वार के दौरान समुद्र में चलने की अनुमति मिलती है। ज्वार के उतार-चढ़ाव के साथ दिन में दो बार होने वाला यह प्राकृतिक नजारा एक अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करता है। अपनी प्राकृतिक सुंदरता के अलावा, चांदीपुर जैव विविधता की एक विविध श्रृंखला का दावा करता है, जिसमें घोड़े की नाल केकड़े और लाल केकड़े अक्सर किनारे पर देखे जाते हैं। पुरी या कोणार्क जैसे अपने लोकप्रिय समकक्षों की तुलना में कम प्रसिद्ध होने के बावजूद, चांदीपुर एक अद्वितीय और शांत तटीय विश्राम की तलाश करने वालों के लिए एक छिपे हुए रत्न के रूप में खड़ा है।

## पनामा नहर के प्लांट से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर तक की सुविधा के लिए

🌍 पनामा नहर:

- पनामा गणराज्य के स्वामित्व और प्रशासित एक लॉक-प्रकार की नहर, जो पनामा के संकीर्ण इस्तमुस के माध्यम से अटलांटिक और प्रशांत महासागरों को जोड़ती है।
- अगस्त 1914 में पूरा हुआ, यह दुनिया के दो सबसे रणनीतिक कृत्रिम जलमार्गों में से एक है, दूसरा स्वेज़ नहर है।

📏 लंबाई और महत्व:

- नहर तटरेखा से तटरेखा तक लगभग 40 मील (65 किमी) और अटलांटिक में गहरे पानी से प्रशांत महासागर में गहरे पानी तक लगभग 50 मील (82 किमी) है।
- यह संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी और पश्चिमी तटों के बीच यात्रा करने वाले जहाजों के साथ-साथ उत्तरी अमेरिका और दक्षिण अमेरिका, यूरोप और पूर्वी एशिया या ऑस्ट्रेलिया के दूसरी तरफ के बंदरगाहों के बीच यात्राओं के लिए दूरी में महत्वपूर्ण बचत प्रदान करता है।

🇺🇸 नियंत्रण का संक्रमण:

- 1914 में इसके उद्घाटन से लेकर 1979 तक, पनामा नहर पर पूरी तरह से संयुक्त राज्य अमेरिका का नियंत्रण था, जिसने इसे बनाया था।
- 1979 में, नहर का नियंत्रण संयुक्त राज्य अमेरिका और पनामा गणराज्य की एक संयुक्त एजेंसी, पनामा नहर आयोग को दे दिया गया और 31 दिसंबर, 1999 को दोपहर में पूरा नियंत्रण पनामा को दे दिया गया।

## नासिक के काला राम मंदिर की कहानी, पीएम मोदी ने किया दौरा

🏛️ पंचवटी का ऐतिहासिक महत्व:

- पंचवटी, जहां मंदिर स्थित है, रामायण में उस स्थान के रूप में महत्व रखता है जहां भगवान राम, सीता और लक्ष्मण ने अपने वनवास के प्रारंभिक वर्ष बिताए थे।

🌟 अम्बेडकर के नेतृत्व में दलित आंदोलन:

- काला राम मंदिर 1930 में बाबासाहेब अम्बेडकर के नेतृत्व में एक ऐतिहासिक आंदोलन का स्थल था, जिसमें दलितों के लिए हिंदू मंदिरों तक पहुंच की मांग की गई थी।

🙏 मंदिर वास्तुकला और मूर्तियाँ:

- 1792 में बने काला राम मंदिर में राम, सीता और लक्ष्मण की मूर्तियों के साथ-साथ मुख्य द्वार पर हनुमान की एक काली मूर्ति है।
- मुख्य मंदिर में 14 सीढ़ियाँ हैं जो राम के 14 वर्षों के वनवास को दर्शाती हैं और 84 खंभे 84 लाख योनियों के चक्र का प्रतीक हैं।